ताल-बेताला



शशिकांत गुप्ते, मोबाइल नं. 78984-88217

हमें दूसरे नंबर के पागल को समझना है?

एक पागल पन मानसिक विकृति होती है दूसरा पागल जो व्यक्ति जुनून पैदा करता है और यह जुनून व्यक्ति नित नई खोज,चिंतन और प्रगतिशील विचार करने के लिए प्रेरित करता है. उक्त विचार महत्वपूर्ण और गहरा विचार है, वास्तव में,'पागलपन' शब्द के दो भिन्न पहलू हैं,जिन्हें गहराई से समझना जरूरी है। 1) चिकित्सीय या मानसिक विकृति (Clinical Insanity)Ñ यह वह स्थिति है जहाँ व्यक्ति का दिमागी संतुलन बिगड़ जाता है, वह वास्तविकता से कट जाता है और अपने विचारों व व्यवहार पर नियंत्रण खो बैठता है। यह एक बीमारी है जिसमें इलाज और सहानुभूति की जरूरत होती है। ऐसे व्यक्ति विक्षिप्त हो जातें हैं।

2) जुनून या रचनात्मक पागलपन (Creative Obsession/Passion): यह ऐसा 'पागलपन' है जो दुनिया को बदल को देता है। जब किसी व्यक्ति के भीतर कुछ नया खोजने, कुछ बड़ा रचने या किसी लक्ष्य को पाने की तीव्र इच्छा जागती है, तो दुनिया अक्सर उसे 'पागल' कहती है। इतिहास गवाह है कि जितने भी बड़े वैज्ञानिक, खोजी, कलाकार या विचारक हुए हैं (जैसे थॉमस एडिसन, अल्बर्ट आइंस्टीन या निकोला टेस्ला), उनके भीतर इसी रचनात्मक जुनून का पागलपन था। दोनों प्रकार के पागल समाज में मौजूद होते हैं। कुछ स्वार्थी और धूर्त लोग ऐड़ा बन पेड़ा खाना इस कहावत को चरितार्थ करते हैं। ऐडा शब्द मराठी शब्द वेडा का समानार्थी शब्द है। मराठी भाषा में वेडा का अर्थ पागल होता है। बहरहाल हम चर्चा कर रहें है पागल पन की। 1 नंबर पैरे में वर्णित पागल पन मानसिक रोग है। मानसिक रोग से ग्रस्त व्यक्ति घोषित पागल होता है। कुछ पागल ऐसे होतें है उनकी सोच संकीर्ण होती है,ये लोग दकियानूसी बातों पर यकीन करते है अर्थात अंधश्रद्धा से पीड़ित होतें हैं। कुछ इस तरह के पागल होते हैं,वे सदा नकारात्मक सोच रखते हैं। ऐसे पागल पन पर चर्चा करना मतलब अंधों के आगे रोना और अपनी आंखें खोना। हमे अपनी प्रगतिजनक सोच को बरकरार रखने के लिए उक्त 2 पैरे में वर्णित पागल लोगों पर चर्चा करनी चाहिए। महान वैज्ञानिकों को प्रायः संकीर्ण सोच रखने वालो ने पागल ही समझा था। गुरुत्वाकर्षण की खोज करने वाला महान वैज्ञानिक न्यूटन अपने अनुसंधान में बहुत तल्लीन रहते थे, लेकिन व्यवहारिक जीवन के उनके बहुत विचित्र किस्से हैं। जब न्यूटन स्कूल में पढ़ता तब एक बार उसे उसके सहपाठी पात्री ने बहुत मारा,वह सहपाठी पढ़ाई में भी अव्वल था। न्यूटन ने एक वर्ष पढ़ाई में मन लगाया और शरीर को ह्रष्ट पुष्ट बनाने के लिए कसरत की और न्यूटन अपने सहपाठी को खूब मारा और उस वर्ष पढ़ाई में सबसे अव्वल आया। यह जुनून था उसमें, एक किस्सा यह है कि,वह किसी काम के लिए घर के बाहर गया,जाते वक्त कमरे का दरवाज बंद कर दिया। कमरे में मोमबत्ती जल रही थी और उसका कुत्ता भी कमरे में बंद हो गया,जब न्यूटन वापस आया,कमरे का दरवाजा खोला तो देखा उसके डॉगी ने कमरे में उछल कूद मचाई इस कारण मोमबत्ती से न्यूटन के कुछ महत्वपूर्ण कागज जल गए। न्यूटन ने अपने डॉगी से बस इतन कहा कि तू नहीं जनता की तूने मेरा कितना बड़ा नुकसान किया है। न्यूटन के घर चूहें बहुत हो गए थे इसलिए उसने बिल्ली पाल रखी थी। बिल्ली के साथ बिल्ली का बच्चा भी था,बिल्ली को एक कमरे से दूसरे कमरे में जाने के लिए सुविधा हो इसलिए न्यूटन ने सुतार को बुलाकर सुतार से दरवाजे में दो छेद करने को कहा, एक बड़ा बिल्ली के निकलने के लिए और दूसरा छोटा बच्चे के लिए। सुतार ने सिर्फ एक बड़ा ही छेद बनाया उस बड़े छेद से बिल्ली के साथ उसके बच्चे को निकलते देख न्यूटन को अचर्च हुआ। न्यूटन को जूते खरीदने थे। न्यूटन ने अपने पैर का नाप नौकर को दिया और कहा बाजार से इस नाप के जूते लेकर आना,थोड़ी देर बाद न्यूटन स्वयं बाहर जा रहा था तो नौकर ने सोचा कि न्यूटन स्वयं ही बाजार जा रहे है तो वे खुद ही जूते खरीद लाएंगे। जब न्यूटन वापस घर आए तो उन्होंने नौकर से पूछा मेरे जूते लेकर आ गए? नौकर ने कहा आप स्वयं ही बाजार गए तो तो जूते खरीद लाते,न्यूटन ने कहा लेकिन मेरे जूते का नाप तुम्हारे ही पास था। इसी तरह सिलाई मशीन की खोज करने वाले को तात्कालिक लोगों ने पागल ही समझा था। सिलाई मशीन की खोज करने वाले को लोगों ने उल्टी खोपड़ी का कहा,लेकिन जब सिलाई मशीन नीचे और छेद की गई सुई से कपड़ों की सिलाई होने लगी तब आलोचकों की आँखें खुल गई। टीवी की खोज करने वाले की तो लोगों ने बहुत मजाक उड़ाई। उसके घर के बाहर से आते जाते उसे चिढ़ा ते थे,यह कह कर कि ये पागल आदमी कहता है लोग वहाँ नाचेंगे और हम यहां देखेंगे। ऐसे वैज्ञानिकों की बहुत बड़ी सूची है। इन दकियानूसी लोगों ने सच्चे संतों के और साहित्यकारों सामाजिक, परिवर्तनकारियों के साथ भी छल किया है। जब महात्मा फुले की पत्नी सावित्री बाई फुले ने स्त्री शिक्षा के लिए सिर्फ आवाज उठाई तब इन्हीं कट्टरपंथियों और पुरुष प्रधान मानसिकता से ग्रसित लोगों ने सावित्री बाई का ना सिर्फ विरोध किया बल्कि उन्हें प्रताड़ित भी किया। लेकिन संघर्षरत सावित्र बाई ने हार नहीं मानी और स्वयं शिक्षा ग्रहण करने के बाद स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने के प्रोत्साहित भी किया। महात्मा गांधीजी ने बरतानिया हुकूमत विरुद्ध अहिंसक क्रांति की और देश में समतामूलक समाज और सांप्रदायिक सदभाव के लिए आवाज बुलंद की तो कट्टर पंथी हिंसक विचारकों के समर्थकों ने गांधीजी के शरीर की हत्या कर दी। समाजवादी चिंतक, विचारक डॉ राममनोहर लोहियाजी ने जब अंग्रेजी हटाओ का नारा बुलंद किया तब लोहियाजी को कट्टर पंक्तियों ने सनकी पीर तक कहा। वास्तव में लोहिया द्वारा चलाए गए अंग्रेजी हटाओ आंदोलन के मुख्य उद्देश्य को दकियानूसी लोगों ने विकृत रूप से प्रस्तुत किया। लोहियाजी का अंगेजी भाषा से द्वेष नहीं था।लोहिया जी स्वयं अंग्रेजी भाषा पर अपना प्रभुत्व रखते थे। सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने डॉ. राममनोहर लोहिया के बारे में यह बात कही थी। अज्ञेयजी का मानना था कि भारत में अंग्रेजी भाषा पर असाधारण पकड़ रखने वाले कुछ ही गिने-चुने लोग हैं,और उनमें डॉ. लोहिया का स्थान बहुत ऊपर था। उन्होंने कहा था: "भारत में अंग्रेजी जानने वाले केवल चार लोग हैं, और लोहिया उनमें से एक हैं" डॉ. राम मनोहर लोहिया स्वयं अंग्रेजी भाषा के बहुत बड़े विद्वान और प्रखर वक्ता थे,वे सार्वजनिक और प्रशासनिक कार्यों में भारतीय भाषाओं विशेषकर हिंदी के उपयोग के प्रबल पक्षधर थे।भारतीय राजनीति स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में जिन चार प्रमुख राजनेताओं को अपने समय में अंग्रेजी भाषा और लेखन का सबसे बड़ा और उत्कृष्ट जानकार माना जाता था, वे ये हैं

1) डॉ. राम मनोहर लोहियाजी
2) पंडित जवाहरलाल नेहरूजी
3) चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (राजाजी)
4) मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (या कुछ संदर्भों में आचार्य जे. बी. कृपलानी) इन नेताओं की अंग्रेजी की अभिव्यक्ति, शब्दावली और लेखन शैली इतनी बेहतरीन थी कि स्वयं ब्रिटिश अधिकारी भी इनके द्वारा लिखे गए पत्रों और लेखों का लोहा मानते थे। लोहियाजी ने यहां तक कहा है कि हिंदी जाए भाड़ में,अपनी मातृ भाषा को महत्व देना चाहिए। चर्चा का सारांश यही है कि हर एक क्षेत्र में परिवर्तन के लिए संघर्ष करने वालों के विरुद्ध कट्टर पंथियों ने छल कपट और हिंसा की है। लेकिन सच्चाई अंततः सच्चाई ही रहती है। संत कबीर साहब ने कहा ही है कि संतो देखत जग बोराना। सांच कहों तो मारन धावे झूठे जग पतियाना।। न्यूटन के व्यवहारिक जीवन के किस्सो को प्रस्तुत करने का मुख्य उद्देश्य यह है कि चिंतको,अनुसंधान में तल्लीन लोगों की महत्वपूर्ण उपलब्धियों नजर अंदाज कर उनके व्यवहारिक जीवन की नादानी की आलोचक ही करते रहते हैं।

अब वेंडर की टी-शर्ट खोलेगी कंपनी की पहचान

ओवरचार्जिंग पर सीधे होगी शिकायत

भोपाल । ट्रेनों में चाय, नाश्ता और खाना बेचने वाले वेंडरों की मनमानी पर लगाम लगाने के लिए रेलवे नई व्यवस्था लागू करने जा रहा है। अब वेंडर की टी-शर्ट पर ही उसकी कंपनी का नाम और मोबाइल नंबर लिखा होगा। इससे यात्री न केवल वेंडर की पहचान कर सकेंगे, बल्कि ओवरचार्जिंग, खराब गुणवत्ता या खानपान से जुड़ी गड़बड़ी होने पर सीधे संबंधित कंपनी की जवाबदेही भी तय करा सकेंगे।

दरअसल, ट्रेनों में खानपान सेवाएं भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (आईआरसीटीसी) के साथ कई निजी कंपनियां भी संचालित करती हैं। ऐसे में यात्रियों को अक्सर यह पता नहीं चल पाता कि संबंधित वेंडर किस कंपनी का कर्मचारी है। शिकायत के समय पहचान स्पष्ट नहीं होने से कार्रवाई में भी परेशानी आती है। इसी समस्या को दूर करने के लिए रेलवे ने वेंडरों की टी-शर्ट पर कंपनी की पहचान और संपर्क नंबर प्रदर्शित करने का निर्णय लिया है।

रोजाना मिलती हैं 20 से 25 शिकायतें

आईआरसीटीसी को खानपान सेवाओं को लेकर रोजाना औसतन 20 से 25 शिकायतें मिलती हैं। इनमें सबसे ज्यादा मामले निर्धारित कीमत से अधिक वसूली और खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता से जुड़े होते हैं। कई बार निजी कंपनियों के वेंडरों की गड़बड़ी के लिए भी आईआरसीटीसी को जिम्मेदार ठहराया जाता है। इससे निगम की छवि प्रभावित होती है। नई व्यवस्था में यात्री वेंडर की टी-शर्ट पर दर्ज कंपनी का नाम और मोबाइल नंबर देखकर शिकायत कर सकेंगे। इससे संबंधित कर्मचारी और सेवा प्रदाता की पहचान करना आसान होगा। जांच में लगने वाला समय भी कम होगा और जिम्मेदारी तय की जा सकेगी।

पहले इन 11 ट्रेनों में होगी शुरुआत

नई व्यवस्था प्रदेश से होकर गुजरने वाली प्रीमियम और महत्वपूर्ण मेल-एक्सप्रेस ट्रेनों में पहले लागू की जाएगी। इनमें शामिल हैं-

1. कर्नाटक संपर्क क्रांति एक्सप्रेस (12649/12650)
2. कोरबा-अमृतसर छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस (18237/18238)
3. मंगलाद्वीप एक्सप्रेस (12617/12618)
4. गोवा एक्सप्रेस (12779/12780)
5. पुष्पक एक्सप्रेस (12533/12534)
6. ग्रैंड ट्रंक एक्सप्रेस (12615/12616)
7. आंध्र प्रदेश एक्सप्रेस (20805/20806)
8. मालवा एक्सप्रेस (12919/12920)
9. अहमदाबाद-बरौनी एक्सप्रेस (19483/19484)
10. कर्नाटक एक्सप्रेस (12627/12628)
11. आंध्र प्रदेश संपर्क क्रांति एक्सप्रेस (12707/12708)

जैकेट पर लोगो और क्यूआर कोड भी

आईआरसीटीसी अपने वेंडरों की जैकेट पर संस्थान का लोगो और क्यूआर कोड लगाने की प्रक्रिया भी शुरू कर चुका है। इससे वेंडरों की पहचान और प्रमाणिकता सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी। आईआरसीटीसी के रीजनल मैनेजर राजेंद्र बोरकन के मुताबिक, खानपान सेवाओं में ओवरचार्जिंग और गुणवत्ता को लेकर लगातार शिकायतें मिलती हैं। नई व्यवस्था से वेंडर और कंपनी की पहचान आसान होगी। इससे शिकायतों पर कार्रवाई करने और संबंधित कंपनी की जवाबदेही तय करने में मदद मिलेगी।

ई-अटेंडेंस लगाने वाले शिक्षकों को मिलेगा प्रशस्ति पत्र

'हमारे शिक्षक' ऐप का नियमित इस्तेमाल करने वालों को सम्मानित करेगा विभाग

भोपाल । मध्य प्रदेश में ई-अटेंडेंस का विरोध कर रहे शिक्षकों के बीच स्कूल शिक्षा विभाग ने नियमित ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज करने वाले शिक्षकों को प्रोत्साहित करने की पहल की है।

अब 'हमारे शिक्षक' ऐप का नियमित और सही तरीके से इस्तेमाल करने वाले शिक्षकों को विभाग डिजिटल प्रशस्ति पत्र देगा। इसमें समय पर ई-अटेंडेंस लगाने के साथ इसी ऐप के जरिए अवकाश आवेदन और अन्य विभागीय काम करने वाले शिक्षक शामिल होंगे। स्कूल शिक्षा विभाग के सचिव डॉ. गोयल ने शुक्रवार को लोक शिक्षण संचालनालय में अधिकारियों के साथ बैठक कर विभागीय गतिविधियों की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने 'हमारे शिक्षक' ई-अटेंडेंस ऐप की उपलब्धियों पर प्रसन्नता जताई। उन्होंने निर्देश दिए कि नियमित और समयबद्ध उपस्थिति दर्ज करने वाले शिक्षकों को ऐप के माध्यम से ही डिजिटल प्रशस्ति पत्र प्रदान किए जाएं।



नियमित उपस्थिति से बेहतर होगी शिक्षा की गुणवत्ता

सचिव डॉ. गोयल ने कहा कि शिक्षकों की नियमित उपस्थिति गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आधारशिला है। इससे स्कूलों में शिक्षण कार्य सुचारू और व्यवस्थित रहता है। साथ ही विद्यार्थियों में अनुशासन, समयबद्धता और पढ़ाई के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। उन्होंने कहा कि 'हमारे शिक्षक' ऐप का सार्थक उपयोग करने वाले शिक्षकों को प्रशस्ति पत्र देने की पहल से डिजिटल व्यवस्था मजबूत होगी।

इससे शिक्षकों में जवाबदेही, अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा को भी प्रोत्साहन मिलेगा। यह शिक्षकों के समर्पण और बेहतर शैक्षणिक वातावरण तैयार करने में उनके योगदान को सम्मान देने का प्रयास है। बैठक में आयुक्त लोक शिक्षण अभिषेक सिंह, अपर मिशन संचालक नंदा भलावे कुशरे और संचालक डॉ. कामना आचार्य सहित विभाग के अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

अनुकंपा नियुक्ति के लंबित मामलों पर चलेगा विशेष अभियान

भोपाल । मध्यप्रदेश शासन ने राज्य के सभी विभागों में अनुकंपा नियुक्ति के वर्षों से लंबित पड़े मामलों का समाधान करने के लिए विशेष अभियान चलाने का निर्णय लिया है। हाल ही में हुई पदोन्नति प्रक्रिया के कारण खाली हुए पदों पर दिवंगत शासकीय सेवकों के पात्र आश्रितों को नौकरियां दी जाएंगी। सामान्य प्रशासन विभाग ने प्रदेश के सभी विभागाध्यक्षों, संभागायुक्तों और जिलाधिकारियों को प्राथमिकता के आधार पर त्वरित कार्रवाई करने के निर्देश जारी किए हैं। सामान्य प्रशासन विभाग की ओर से जारी दिशा-निर्देशों में स्पष्ट किया गया है कि राज्य, संभाग और जिला स्तर के अनेक कार्यालयों में उपयुक्त पद रिक्त न होने के कारण अनुकंपा नियुक्ति के कई मामले लंबे समय से लंबित बने हुए थे। प्रदेश सरकार ने पिछले महीने विशेष अभियान चलाकर बड़े पैमाने पर कर्मचारियों की पदोन्नतियां की हैं। इस प्रक्रिया के पूरा होने से विभिन्न संवर्गों में पर्याप्त पद रिक्त हो गए हैं। शासन ने सभी विभागों को निर्देश दिए हैं कि वे अपने यहां उपलब्ध रिक्तियों के अनुसार योग्यता के आधार पर सभी पात्र आश्रितों के लंबित आवेदनों का शीघ्रता से निराकरण करें।

इससे पहले, लोक शिक्षण आयुक्त ने एक विशेष पहल करते हुए केवल दस दिन की अवधि में 954 दिवंगत शिक्षकों और कर्मचारियों के परिजनों को अनुकंपा नियुक्ति दी थी। इस प्रक्रिया के बाद मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव ने राज्य के सभी प्रशासनिक विभागों में लंबित पड़े अनुकंपा नियुक्ति के मामलों के निराकरण के लिए विशेष अभियान चलाने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री के इस निर्णय के बाद सामान्य प्रशासन विभाग ने शुक्रवार को यह निर्देश जारी किए।

एक लाख शिक्षकों में से 34 हजार ने ही भरे फॉर्म

सुप्रीम कोर्ट की समयसीमा के बीच टीईटी पर सुस्ती

भोपाल । सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद मध्यप्रदेश के एक लाख से अधिक शिक्षकों के सामने शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) पास करने की चुनौती है, लेकिन परीक्षा के लिए आवेदन करने की रफ्तार धीमी है। अब तक केवल 34 हजार शिक्षकों ने ही आवेदन किया है।

यानी पात्रता परीक्षा देने वाले शिक्षकों में से करीब एक तिहाई ने ही फॉर्म भरा है। इधर, स्कूल शिक्षा विभाग और माध्यमिक शिक्षा मंडल दिसंबर में परीक्षा कराने की तैयारी में जुटे हैं। परीक्षा की तारीख दिसंबर के पहले या दूसरे सप्ताह में घोषित किए जाने की संभावना है। टीईटी को लेकर सबसे बड़ी चुनौती शिक्षकों की भागीदारी बढ़ाना है। प्रदेश में एक लाख से अधिक शिक्षकों को यह परीक्षा देनी है, लेकिन अब तक करीब 34 हजार आवेदन ही जमा हुए हैं। ऐसे में शेष शिक्षकों को आवेदन और परीक्षा की तैयारी के लिए समय देना विभाग के सामने चुनौती है। लोक शिक्षण संचालनालय के अधिकारियों के मुताबिक, जिन शिक्षकों ने आवेदन किया है, वे निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार तैयारी कर रहे हैं। शिक्षकों को मदद के लिए समर्थ पोर्टल पर पूरा पाठ्यक्रम और अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई गई है। जिला शिक्षा अधिकारियों को भी शिक्षकों को परीक्षा पैटर्न और तैयारी संबंधी जानकारी देने के निर्देश दिए गए हैं। पहले टीईटी परीक्षा ऑनलाइन कराने की तैयारी थी, लेकिन शिक्षकों की मांग पर सरकार ने इसे ऑफलाइन कराने का निर्णय लिया है। स्कूल शिक्षा विभाग और माध्यमिक शिक्षा मंडल के बीच परीक्षा की व्यवस्थाओं को लेकर लगातार चर्चा चल रही है। शुक्रवार को भी अधिकारियों के बीच इस संबंध में संवाद हुआ। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के मुताबिक शिक्षकों को 28 अगस्त 2028 तक टीईटी उत्तीर्ण करना अनिवार्य है। सरकार का प्रयास है कि निर्धारित समयसीमा से पहले सभी शिक्षक परीक्षा पास कर लें।

साइबर खतरे के अलर्ट से 30 से ज्यादा सरकारी वेबसाइटें बंद

भोपाल । मध्यप्रदेश के सरकारी विभागों की साइबर सुरक्षा पर बड़ा सवाल खड़ा हो गया है। साइबर अटैक की आशंका के चलते प्रदेश के 30 से ज्यादा सरकारी विभागों की वेबसाइट और पोर्टल पिछले एक सप्ताह से बंद हैं। इनमें जेल, राजस्व, ऊर्जा, उद्योग और सहकारिता जैसे महत्वपूर्ण विभाग शामिल हैं। वेबसाइटें बंद होने से विभागीय कामकाज प्रभावित हो रहा है। ऑनलाइन सेवाएं ठप होने के कारण फिलहाल सरकारी कामकाज ऑफलाइन माध्यम से किया जा रहा है। जानकारी के मुताबिक, मध्यप्रदेश साइबर इमरजेंसी रिस्पांस टीम ने सरकारी वेबसाइटों की सुरक्षा को लेकर एडवाइजरी जारी की थी। इसमें बताया गया कि कई विभागों की वेबसाइट पुराने पीएचपी वर्जन और फ्रेमवर्क पर संचालित हो रही हैं। इनमें सुरक्षा संबंधी खामियां हैं, जिनका फायदा उठाकर हैकर सिस्टम में सेंध लगा सकते हैं।







स्वामी मेसर्स एसोसिएटेड प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (एम.पी.) प्रा.लि. इंदौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक मोनिका सेठ द्वारा 17, न्यू देवास रोड (संजय गांधी मार्ग) इंदौर से मुद्रित एवं 5, प्रेस कॉम्प्लेक्स, इंदौर से प्रकाशित संपादक-मोनिका सेठ,
फोन नं. 3551753, 2434701, 2544433, समाचार पत्र से प्रकाशित समाचार के लिए सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा। समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार*